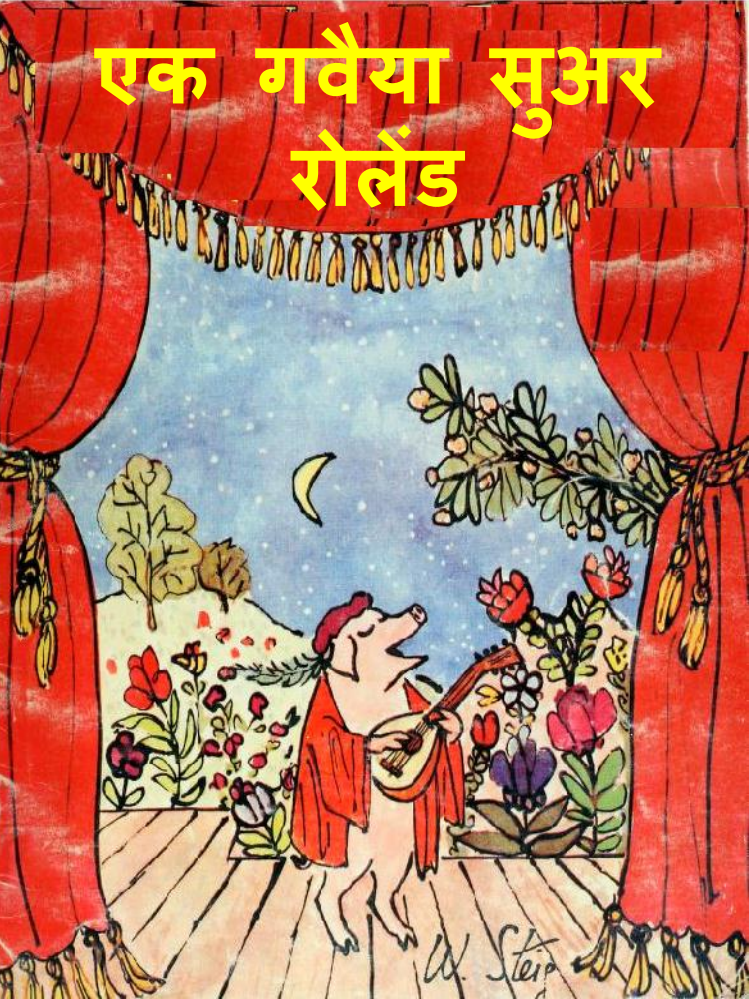


# एक गवैया सुअर रोलेंड



# एक गवैया सुअर रोलेंड

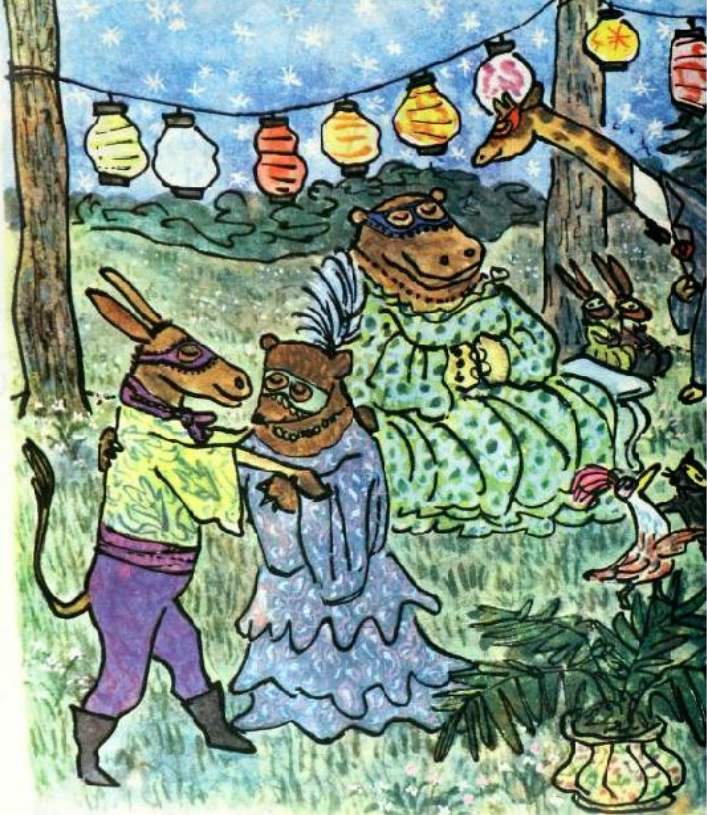


लेखक और चित्रकार: विलियम स्टिग  
अनुवादक: अशोक गुप्ता



बहुत पहले रोलैंड नाम का एक सुअर रहता था। वह इतना बढ़िया गाता और वीणा बजाता था कि उसके दोस्तों का उसे सुनते कभी मन नहीं भरता था। वो सिर से पैर तक एक पैदायशी संगीतकार था। और-तो-और उसे खूब सारे चुटकुले और पहेलियाँ भी आती थीं। वह सिर्फ सामने वाले पैंरों पर खड़ा होकर अपने आपको संतुलित भी कर सकता था।





कहीं भी पार्टी हो, रोलेंड को सबसे पहले बुलाया जाता था. वह अपने दोस्तों को नए गानों और संगीत से अक्सर आश्चर्यचकित और लुभा देता था. कुछ गाने और उनकी धुन वह खुद लिखता और बनाता था जबकि कुछ दूसरों के होते थे.





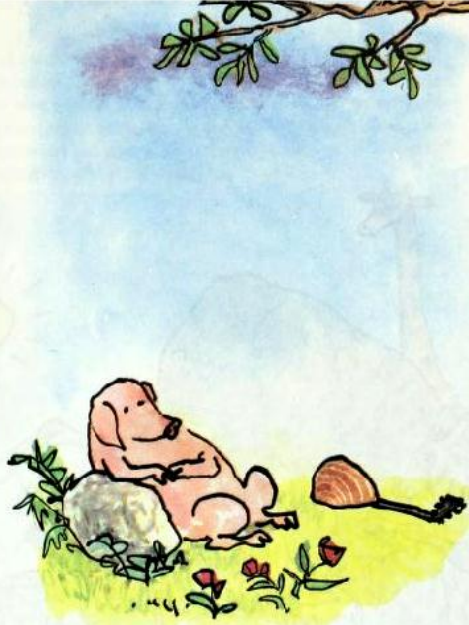
डांस करो अपने पार्टनर के साथ -- एक, दो, तीन --  
लय के साथ, आगे बढ़ते हुए, झुक-झुककर  
जीवन तो एक मुक्त पंछी है  
ऐसे ही मस्त नाचो भोर होने तक!



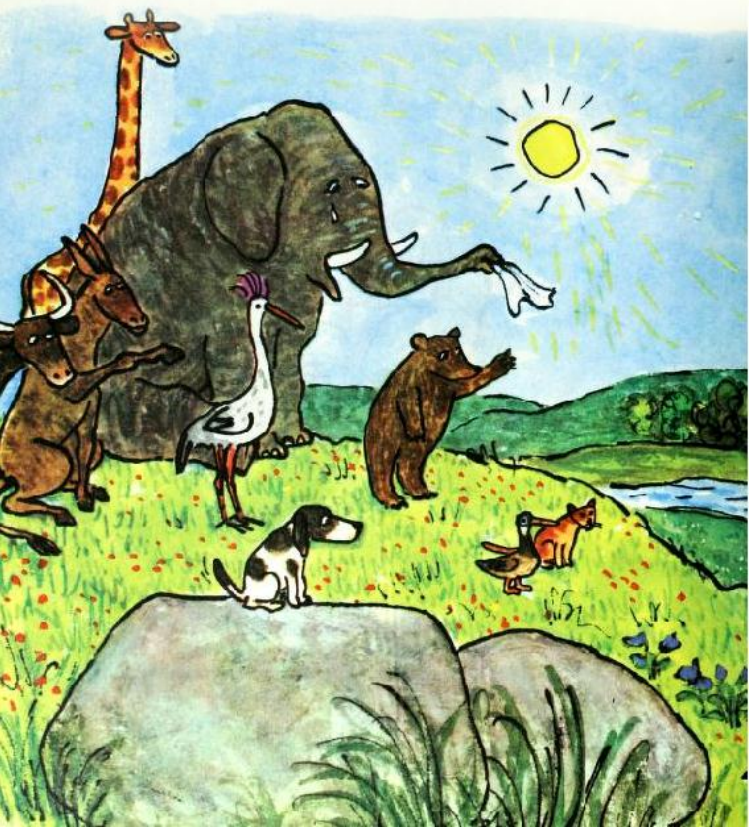
एक दिन रोलेंड अपने दोस्त ब्राइन - एक गधा, और वेस्ली - एक बत्तख, के साथ चाय पी रहा था.

“यह बड़े अफ़सोस की बात है,” वेस्ली बोली, “कि तुम्हारा मधुर गान केवल वही सुन सकते हैं जो तुम्हें जानते हैं. मेरे ख्याल में तो तुम्हें दूर-दूर तक सफ़र करना चाहिए जिससे दुनिया भर के लोग तुम्हारा गाना सुन सकें और तुम्हारी आवाज की दाद दे सकें.”

“हाँ, मैं बिल्कुल इस बात का समर्थन करता हूँ,” ब्राइन-गधा बोला, “तुम बहुत प्रसिद्ध और अमीर हो सकते हो. सच पूछो तो तुम्हारे अलावा इस लायक और है ही कौन?”

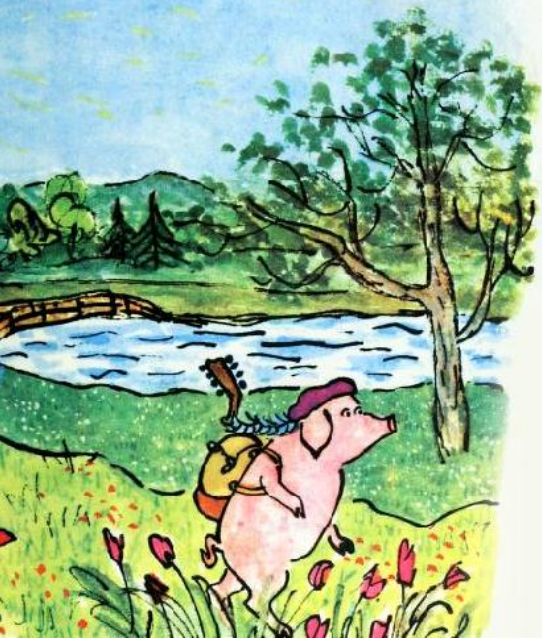


जब रोलेंड ने अपने मित्रों की बात पर गौर करना शुरू किया, तो वह उनकी सलाह के अलावा कुछ और सोच ही नहीं पाया. वो अपनी वाह-वाही और अमीरी के सपने देखने लगा. और वह अपनी जिंदगी से असंतुष्ट होने लगा.





अंत में, जुलाई की एक सुबह उसने अपने दोस्तों से अलविदा ली और दुनिया भर में घूम-घूम कर गाने के लिए चल पड़ा. दोस्त बहुत दुःखी थे पर यह सोचकर संतुष्ट थे कि शायद रोलैंड के लिये यही अच्छा हो और फिर सबने मिलकर उसकी सफलता की कामना की. बेसिल हाथी ने रोलैंड को एक लम्बी कलगी वाली मखमली टोपी दी. लोरेजो कत्ते ने उसे एक बस्ता दिया जिसमें एक कम्बल, माचिस की डिबिया के साथ-साथ कुछ और काम का सामान भी था.



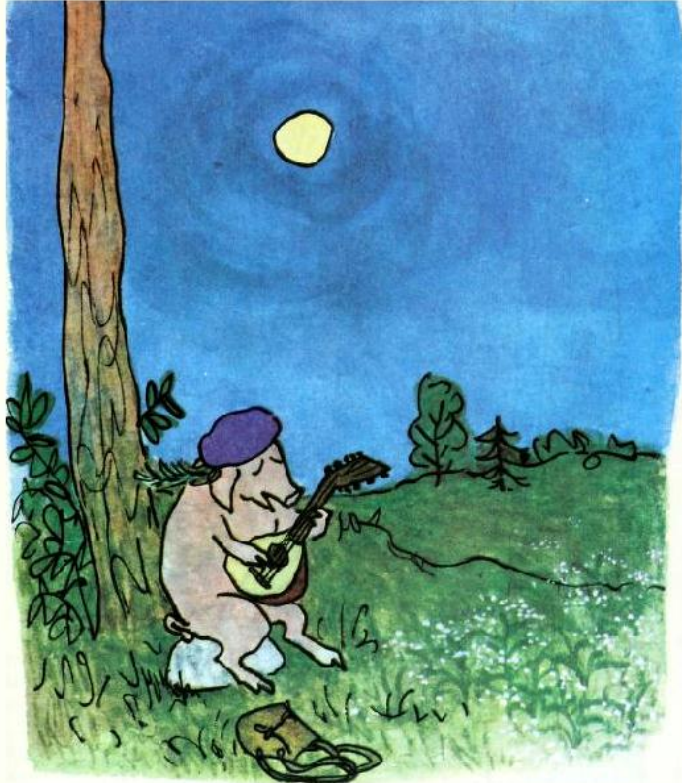


रोलेंड सारे दिन चलता रहा.  
उसे रास्ते में कोई भी नहीं  
मिला.



वह बहुत अकेला महसूस  
कर रहा था. एक बार तो  
उसने सोचा कि क्यों न  
मैं वापस अपने दोस्तों के  
पास लौट जाऊं.





रात को सोने जाते वक्त, भगवान से प्रार्थना करने से पहले, उसने एक दर्द-भरा गीत गाया.

मैं हूँ चाँद की तरह अकेला, आकाश में भटकने वाला  
किसे सुनाऊँ दिले-दर्द, कौन है यहाँ जो सुनेगा मेरा रोना!



तभी पेड़ों के पीछे से अचानक एक लोमड़ी निकलकर आई और बोली, “वाह-वाह, क्या खूब गाते हो! इतना मधुर गाना मैंने अपनी जिंदगी में पहले कभी नहीं सुना! तुम्हारी आवाज इतनी मधुर और दिल को छूने वाली है जैसे मई के महीने में उगे कोमल फूल.”

लोमड़ी ने सामने आकर अपना परिचय दिया, “मेरा नाम है सेबेस्टियन.” रोलैंड ने भी अपना परिचय दिया और बताया कि वह यहाँ अकेला बैठा क्यों गा रहा था.





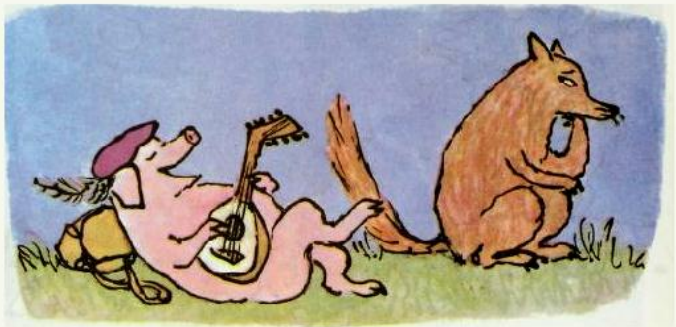
लोमड़ी बोली, “अरे, मैं तुम्हें सीधे राजमहल ले चलती हूँ. वहाँ तुम राजा को अपना गाना सुनाना. राजा से तो मेरी बहुत पुरानी जान-पहचान है.”

रोलेंड बोला, “यह तो मेरे जैसे संगीतकार के लिए बहुत सम्मान की बात होगी. मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि मेरी मुलाकात तुम से हुई.”

“अगर हम सारी रात चलते रहे तो सुबह तक वहाँ पहुँच जायेंगे,” सेबेस्टियन बोली. “और फिर चाँद की रोशनी भी तो है हमें रास्ता दिखाने के लिये.”

दोनों तेजी से चल पड़े -- रोलेंड सपने देखते हुए और लोमड़ी षड्यंत्र रचते हुए.





लगभग एक मील चलने के बाद लोमड़ी ने रोलेंड से गाना सुनाने के लिए कहा. रोलेंड गाने लगा...

मौसम बड़ा सुहाना है  
 फूलों का लुट रहा खजाना है  
 हंसते, गाते, जाते हम  
 छम-छमा-छम, छम

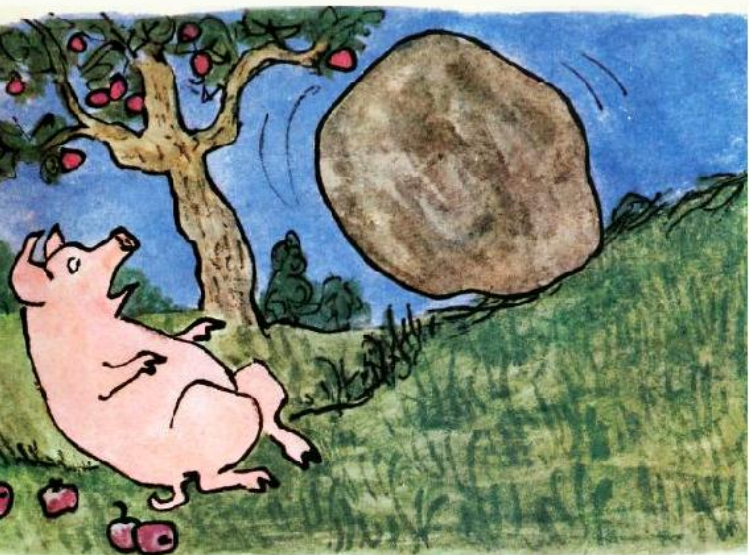


लोमड़ी ने सोचा, “बड़े अफ़सोस की बात है कि मैं इसे खाने जा रही हूँ. दुनिया का नुकसान तो बहुत होगा कि इतना बड़ा संगीतकार खत्म हो गया. पर मुझे तो इसे खाना ही होगा.”

आधी रात वे एक सेब के पेड़ के पास से गुजरे. रोलेंड को सेब बहुत पसंद थे. उसने जमीन में पड़े सेबों में से कुछ खाये और सेबेस्टियन से पूछा, “तुम भी खाओ.”

“नहीं, धन्यवाद,” लोमड़ी बोली. “मुझे थोड़ी देर में बहुत बड़ी दावत मिलने वाली है.”

यह कह कर वो वहां से खिसक ली.



कुछ ही क्षणों में एक बहुत बड़ी चट्टान पहाड़ी से लुढ़कती हुई नीचे आई. रोलेंड बाल-बाल बचा. अगर वह उसके ऊपर आकर गिरती तो उसका अंत निश्चित था.

सेबेस्टियन अचानक न जाने कहाँ से प्रगट हुई और पूछने लगी, “अरे, क्या हुआ?” (जैसे उसे कुछ मालूम ही न हो!) रोलेंड ने उसे सब कुछ बता दिया.

“यह तो बहुत बुरा हुआ,” सेबेस्टियन बोली. “इस समय में इस के बारे में सोचना भी नहीं चाहती.” वास्तविकता यह थी कि, इसके अलावा वह कुछ और सोचना ही नहीं चाहती थी.



यात्रा के दौरान, थोड़ी देर बाद, जब रोलेंड पेड़ के नीचे सुस्ता रहा था तब सेबेस्टियन फिर से गायब हो गई.

अचानक एक बर्र का बड़ा छत्ता पेड़ से नीचे गिरा और हजारों बर्रें रोलेंड के ऊपर भिनभिनाने लगीं. अगर रोलेंड जल्दी से दौड़कर पास के तालाब में डुबकी न लगाता, तो आज बर्रों ने उसे खत्म कर दिया होता.





सेबेस्टियन फिर से प्रगट हुई. वह बोली, “लगता है मुसीबत तुम्हारे पीछे पड़ी है.” “क्यों न हम एक झपकी ले लें? आराम करके, सुबह फिर यात्रा शुरू करेंगे. आराम से पहले कृपया एक गाना तो सुना दो?” फिर रोलेंड ने गाना शुरू किया ...

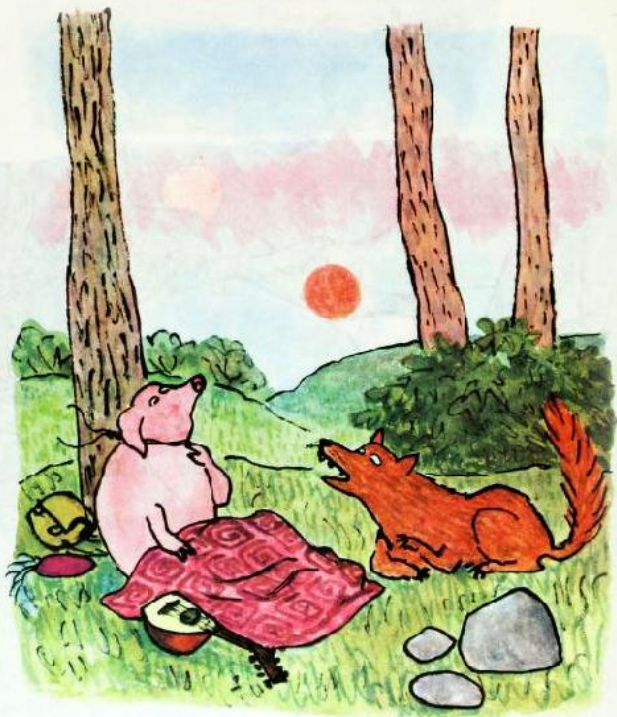
मुझे प्यार है उसकी हर चीज से  
उसकी पूँछ से, कानों से, थूथनी से  
देखती है मुझे प्यार से वो जब  
हवा पे चलने लगता हूँ मैं तब



और वो दोनों सो गये. चाँद धीरे-धीरे ढलने लगा.

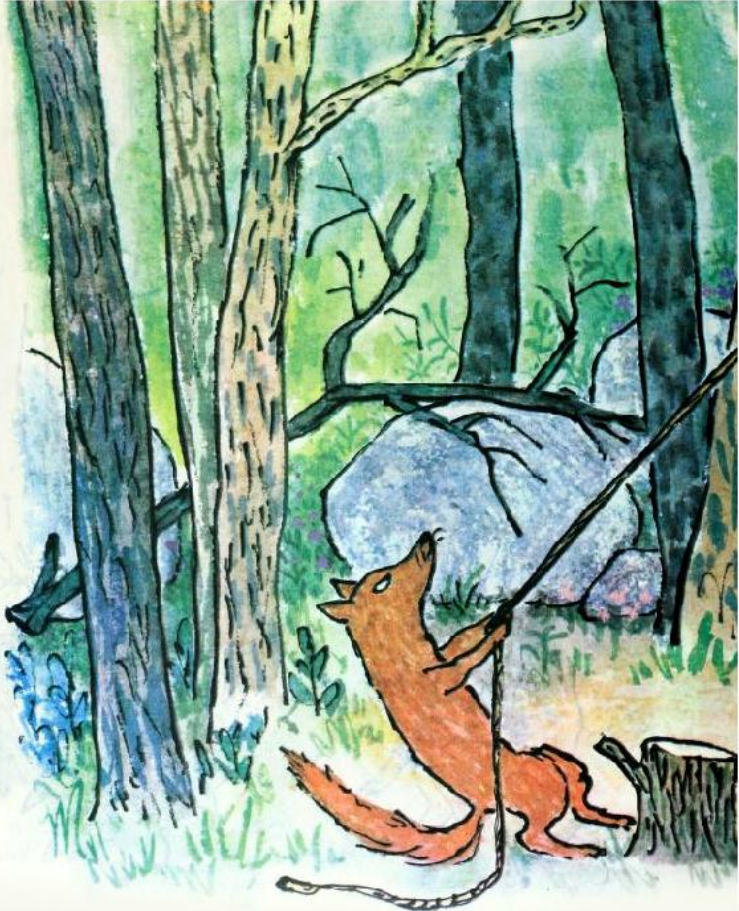
सुबह उठने पर रोलेंड ने देखा कि वीणा का तार  
उसके गले में बंधा हुआ था.

“यह अजूबा कैसे हुआ?” लोमड़ी ने पूछा.  
रोलेंड भी आश्चर्य करने लगा.



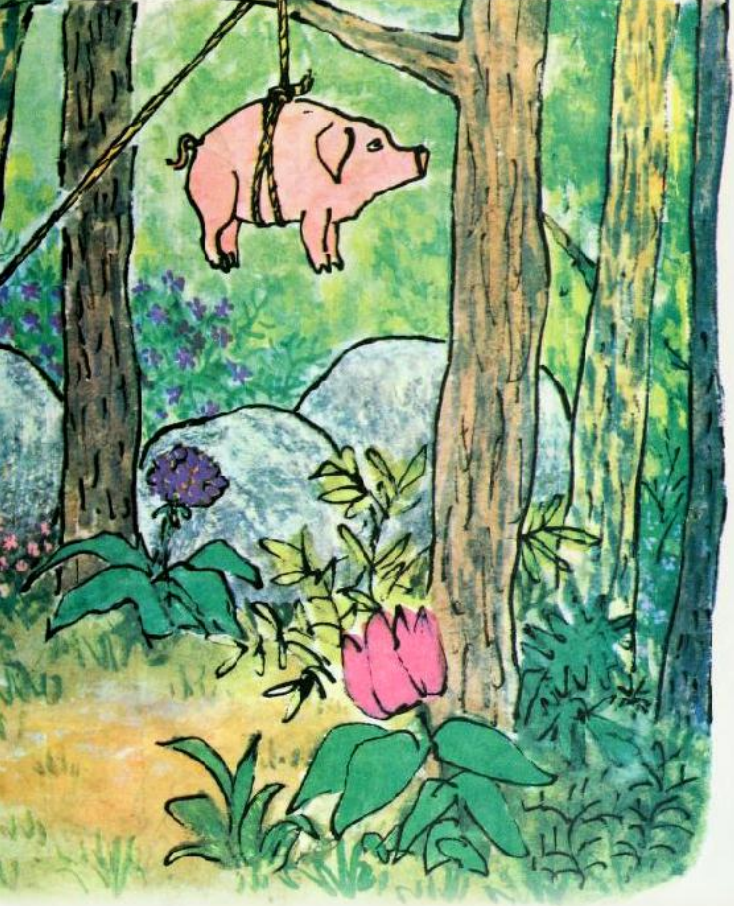
वो सारी सुबह घूमते रहे. दोपहर में जब रोलेंड पेड़ की एक टूँठ पर बैठा आराम कर रहा था तब लोमड़ी ने कहा, “मेरे दोस्त रोलेंड, तुम्हारे लिए एक खुश खबरी है. अब हम राजमहल से बहुत दूर नहीं हैं. अगर तुम सुअर न होते तो पेड़ पर चढ़कर यहाँ से खुद ही महल की मीनारों को देख पाते. मेरे पास एक आइडिया है. मैं तुम्हें पेड़ पर ऊपर चढ़ा सकती हूँ.”





फिर सेबेस्टियन एक रस्सी ढूंढ कर लाई और उसने जल्दी ही रोलेंड को हवा में लटका दिया.

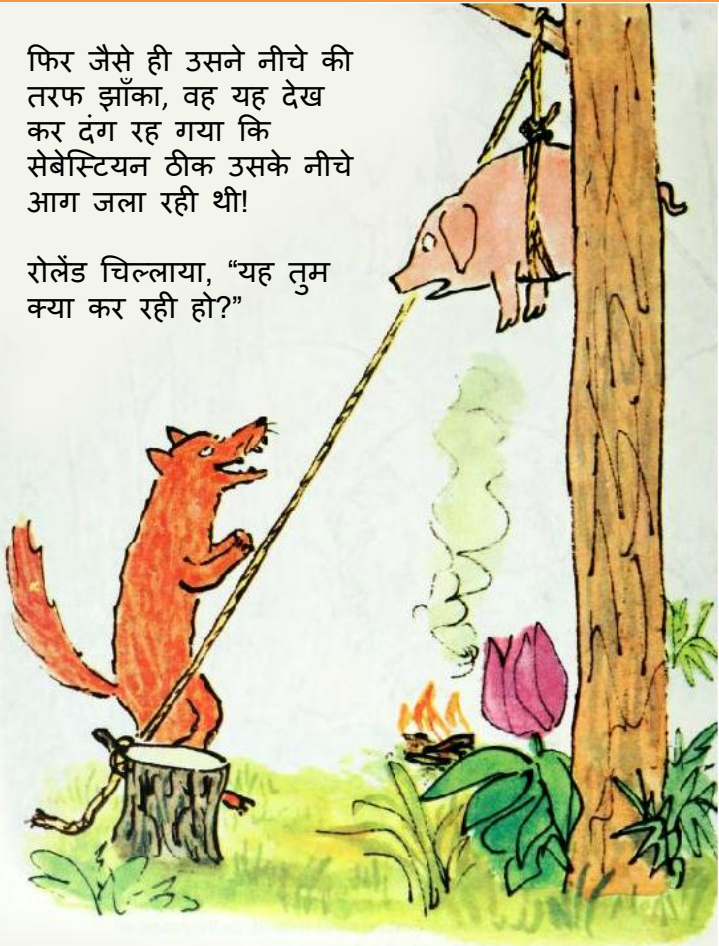




रोलेंड ने इधर-उधर देखा और कहा, “मुझे तो कोई मीनार नजर नहीं आ रही. सिर्फ खेत और नदी-नाले ही दिख रहे हैं.”

फिर जैसे ही उसने नीचे की  
तरफ झाँका, वह यह देख  
कर दंग रह गया कि  
सेबेस्टियन ठीक उसके नीचे  
आग जला रही थी!

रोलेंड चिल्लाया, “यह तुम  
क्या कर रही हो?”





“मैं रस्सी नीचे कर तुम्हें आग में भूँगी,” सेबेस्टियन बोली, “कितना मजा आएगा तुम्हें खाने में. अगर थोड़ा धनिया लगाकर खाऊं तो शायद और अच्छा लगे.”

रोलेंड को अब लगने लगा कि लोमड़ी कोई मजाक नहीं कर रही थी. वह रोने लगा. उसने आखिरी गाना गाने के लिये अपनी वीणा मांगी. लोमड़ी तो रोलेंड का गाना सुनने के लिए हमेशा तैयार रहती थी. उसने वीणा दे दी. रोलेंड ने बहुत भावुक होकर, दिल से, सुन्दर आवाज में, एक गाना गाया. इतना बढ़िया गीत शायद ही उसने कभी गाया होगा. और गाने की रचना भी उसने तभी उसी पल की....

अलविदा प्यारी दुनिया, समुद्र का किनारा, खूबसूरत पहाड़ियाँ  
अलविदा सुंदर तितलियों, चिड़ियों, और मधुमक्खियों  
अलविदा मेरे दिन, मेरी रातें, और मौसम चारों  
अलविदा फूलों से लदे बाग, और फलों से भरे पेड़ों  
अलविदा सूरज की गर्म किरणों, और हवा के ठण्डे झोंकों  
मेरे दर्द दिल की यही है आखिरी पुकार  
अलविदा.... अलविदा..... अलविदा.....

तभी राजा, जो गांव की सैर पर निकला था. वो पालकी में बैठा पास के जंगल से गुजर रहा था. उसने रोलेंड की दिलकश आवाज सुनी.

रोलेंड की वीणा गिरी और वह बेहोश हो गया.

“अरे देखो तो, मेरे जंगल में ये क्या बदमाशी हो रही है?” राजा ने जब सेबेस्टियन को देखा तो वो चिल्लाया.

“सिर्फ एक मजाक है, महाराज,” सेबेस्टियन बोली, “सिर्फ एक मजाक है.”







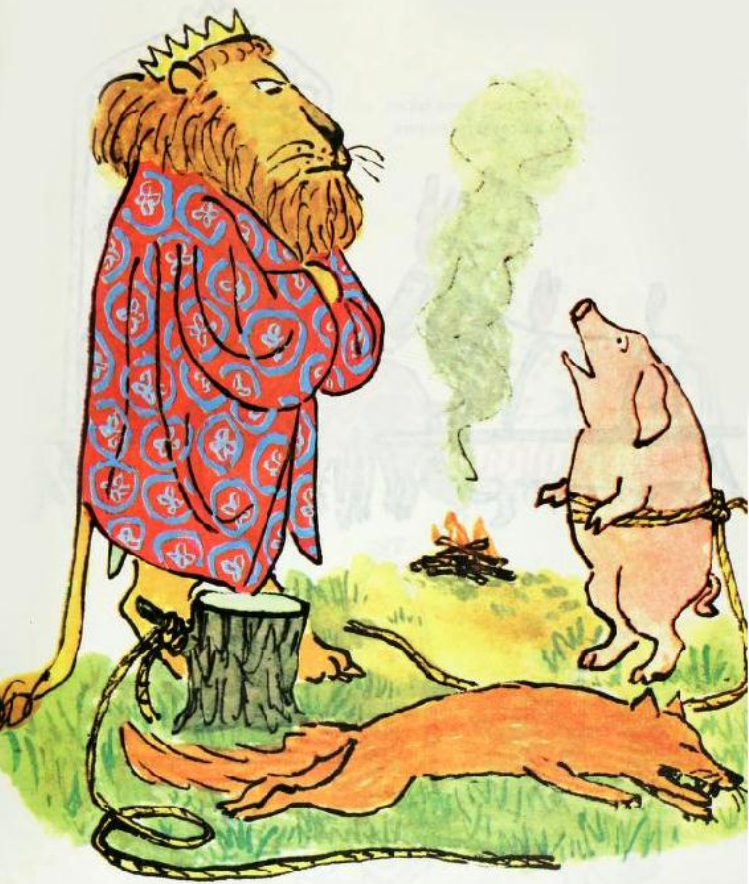


राजा ने क्रोधपूर्वक तलवार से एक ही झटके में रस्सी काट दी. रोलेंड धड़ाम से सेबेस्टियन के ऊपर गिरा और उससे लोमड़ी बेहोश हो गई.

“अजनबी सुअर, तुम कौन हो,” राजा ने पूछा.

“मैं रोलेंड हूँ, महाराज,” रोलेंड बोला, “एक भाट, मैं इधर-उधर घूम-फिर कर गाता-बजाता हूँ. और इस लोमड़ी ने -- सेबेस्टियन इसका नाम है इसने -- मुझे वचन दिया था कि वह मुझे आप से मिलवाएगी जिससे मैं आपको अपना संगीत सुना सकूँ.”

“वो तो हम सुन ही चुके हैं, कुछ क्षण पहले,” राजा बोला, “हमने दुनियाँ की ढेरों मधुर आवाजें सुनी हैं, परन्तु तुम्हारी जैसी दिव्य आवाज आज तक नहीं सुनी. तुम सर्वोच्च हो.”



रोलेंड और सेबेस्टियन को  
राजा की पालकी में  
राजमहल ले जाया गया.



वहाँ रोलेंड को पहनने के लिये एक  
सिल्क के अस्तर का लाल-मखमली कोट  
दिया गया. और रहने के लिए एक  
बढ़िया कमरा दिया गया.







बाद में राजदरबार में उपस्थित विशिष्ट  
श्रोतागणों ने परम प्रशंसा के साथ रोलैंड का यह  
गाना सुना....



अभिवादन ऊपर वाले का,  
सम्मान का, साहस का, प्रेम का  
संगीत इस दरबार में यँ ही गूँजता रहे  
मेरे राजा, तेरी जिंदगी बरकरार रहे

सेबेस्टियन को काल-कोठरी में  
बंद कर दिया गया. वहाँ उसकी  
जिंदगी बासी-रोटी, खट्टे-अंगूर,  
और पानी पर गुजरी.



रोलेंड ने विश्व-ख्याति प्राप्त की और इतना धन बटोरा  
जितना कोई सुअर सोच भी नहीं सकता. ढेरों सम्मानों के  
साथ उसे, उत्कृष्टता का सर्वोच्च पदक भी मिला -- एक  
पत्तियों में लिपटा सोने का सेब -- जो वह अपने गले में  
सिल्क के धागे से लटकाकर हमेशा पहनता था!



